

सतिगुर सां मूं नेहु लगायो आ ।

लोक सुखनि जो भानु भुलायो आ ॥

सतिगुर बादलु मुहिंजो मनु मोरु, चन्द्रु साहिबु मनु कयुमि चकोरु
राति दीहां तकियां कृपा कोर, साह सनेहु सजायो आ ॥

रूप रसामृत प्राण प्यासी, दम दम दिलिड़ी दरद उदासी
करियां तवहां जी चरण खवासी, उमंगु इहो मन भायो आ ॥

मुखिड़े जहिंजे मधुर हसी आ, सूरत साई नैन वसी आ
रोम रोम में छबि विलसी आ, जीवनु सफलु बणायो आ ॥

मधुरी मूरति नेह निमाणी, सुहाग चरणनि में सुरति समाणी
सुधा सरसु जहिंजी मिठिड़ी वाणी, प्रेम जो पातु पड़िहायो आ ॥

समुद्र वांगे गुणनि गम्भीरु, हिमाचल वांगे धर्म में धीरु
मन इन्द्रियुनि वसि करण में वीरु, नाम जो नारो वजायो आ ॥

बुधि विशाल हैं अखण्डु ज्ञानी, दिव्य आनन्द जो दिलिबरु दानी
पाण प्रभू पहिरे जामो इन्सानी, जगत उधारण आयो आ ॥

लोक मुकुटमणि मैगसि चन्दा, श्री सियरघुवर पद प्रेम अमन्दा
सतिगुरु साहिबु जन सुखकन्दा, श्रुति इऐं फरिमायो आ ॥